**अत्यतं गोपनीय - केवल आतंरिक एवं सीमित प्रयोग हेतु**

# सीनियर स्कूल सर्टिफिके ट परीक्षा - **2020**

## अंक-योजना HISTORY

**SUBJECT CODE : 027 PAPER CODE : 61/2/1**

### सामान्य निर्देश :-

1. आप जानते हैं कि परीक्षार्थियों के सही और उचित आकलन के लिए उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी-सी भूल भी गंभीर समस्या को जन्म दे सकती है जो परीक्षार्थियों के भविष्य, शिक्षा प्रणाली और अध्यापन-व्यवस्था को भी प्रभावित कर सकती है। इससे बचने के लिए अनुरोध किया जाता है कि मूल्यांकन प्रारंभ करने से पूर्व ही आप मूल्यांकन निर्देशों को **पढ़ और समझ** लें। **मूल्यांकन हम सबके लिए 10-12 दिन का मिशन है अतः यह आवश्यक है कि आप इसमें अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।**

2. मूल्यांकन अंक-योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही किया जाना चाहिए, अपनी व्यक्तिगत व्याख्या या किसी अन्य धारणा के अनुसार नहीं। यह अनिवार्य है कि अंक-योजना का अनुपालन पूरी तरह और निष्ठापूर्वक किया जाए। **हालाँकि, मूल्यांकन करते समय नवीनतम सूचना और ज्ञान पर आधारित अथवा नवाचार पर आधारित उत्तरों को उनकी सत्यता और उपयुक्तता को परखते हुए पूरे अंक दिए जाएँ।**

3. मुख्य परीक्षक प्रत्येक मूल्यांकन कर्ता के द्वारा पहले दिन जाँची गई पाँच उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन की जाँच ध्यानपूर्वक करें और आश्वस्त हों कि मूल्यांकन-योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही मूल्यांकन किया जा रहा है। परीक्षकों को बाकी उत्तर पुस्तिकाएँ तभी दी जाएँ जब वह आश्वस्त हो कि उनके अंकन में कोई भिन्नता नहीं है।

4. परीक्षक सही उत्तर पर सही का निशान (√) लगाएँ और गलत उत्तर पर गलत का (**×**)। मूल्यांकन-कर्ता द्वारा ऐसा चिह्न न लगाने से ऐसा समझ में आता है कि उत्तर सही है परंतु उस पर अंक नहीं दिए गए। परीक्षकों द्वारा यह भूल सर्वाधिक की जाती है।

5. यदि किसी प्रश्न का उपभाग हों तो कृपया प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर **दायीं ओर** अंक दिए जाएँ। बाद में इन उपभागों के अंकों का योग **बायीं ओर** के हाशिये में लिखकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए। **इसका अनुपालन दृढ़तापूर्वक किया जाए।**

6. यदि किसी प्रश्न के कोई उपभाग न हो तो बायीं ओर के हाशिये में अंक दिए जाएँ और उन्हें गोलाकृत किया जाए। इसके अनुपालन में भी दृढ़ता बरती जाए।

7. यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का उत्तर दो स्थानों पर लिख दिया है और किसी को काटा नहीं है तो जिस उत्तर पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हों, उस पर अंक दें और दूसरे को काट दें। यदि परीक्षार्थी ने अतिरिक्त प्रश्न/प्रश्नों का उत्तर दे दिया है तो जिन उत्तरों पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हों उन्हें ही स्वीकार करें/ उन्हीं पर अंक दें।

8. एक ही प्रकार की अशुद्धि बार-बार हो तो उसे अनदेखा करें और उस पर अंक न काटे जाएँ।

9. यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि मूल्यांकन में संपूर्ण अंक पैमाने 0 – 80 का प्रयोग अभीष्ट है अर्थात परीक्षार्थी ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर-बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे पूरे अंक देने में संकोच न करें।

10. प्रत्येक परीक्षक को पूर्ण कार्य-अवधि में अर्थात 8 घंटे प्रतिदिन अनिवार्य रूप से मूल्यांकन कार्य करना है और प्रतिदिन मुख्य विषयों की बीस उत्तर-पुस्तिकाएँ तथा अन्य विषयों की 25 उत्तर पुस्तिकाएँ जाँचनी हैं। (विस्तृत विवरण 'स्पॉट गाइडलाइन' में दिया गया है)

11. यह सुनिश्चित करें कि आप निम्नलिखित प्रकार की त्रुटियाँ न करें जो पिछले वर्षों में की जाती रही हैं –

- उत्तर पुस्तिका में किसी उत्तर या उत्तर के अंश को जाँचे बिना छोड़ देना।
- उत्तर के लिए निर्धारित अंकों से अधिक अंक देना।
- उत्तर या दिए गए अंकों का योग ठीक न होना।
- उत्तर पुस्तिका के अंदर दिए गए अंकों का आवरण पृष्ठ पर सही अंतरण न होना।
- आवरण पृष्ठ पर प्रश्नानुसार योग करने में अशुद्धि।
- योग करने में अंकों और शब्द में अंतर होना।
- उत्तर पुस्तिकाओं से ऑनलाइन अंकसूची में सही अंतरण न होना।
- कुल अंकों के योग में अशुद्धि
- उत्तरों पर सही का चिह्न ( √ ) लगाना किंतु अंक न देना। सुनिश्चित करें कि ( √) या **(×)** का उपयुक्त निशान ठीक ढंग से और स्पष्ट रूप से लगा हो। यह मात्र एक रेखा के रूप में न हो)
- उत्तर का एक भाग सही और दूसरा गलत हो किंतु अंक न दिए गए हों।

12. उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए यदि कोई उत्तर पूर्ण रूप से गलत हो तो उस पर (x) निशान लगाएँ और शून्य (0) अंक दें।

13. उत्तर पुस्तिका में किसी प्रश्न का बिना जाँचे हुए छूट जाना या योग में किसी भूल का पता लगना, मूल्यांकन कार्य में लगे सभी लोगों की छवि को और बोर्ड की प्रतिष्ठा को धूमिल करता है।

14. सभी परीक्षक वास्तविक मूल्यांकन कार्य से पहले 'स्पॉट इवैल्यूएशन' के निर्देशों से सुपरिचित हो जाएँ।

15. प्रत्येक परीक्षक सुनिश्चित करे कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन हुआ है, आवरण पृष्ठ पर तथा योग में कोई अशुद्धि नहीं रह गई है तथा कुल योग को शब्दों और अंकों में लिखा गया है।

16. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड पुन: मूल्यांकन प्रक्रिया के अंतर्गत परीक्षार्थियों के अनुरोध पर निर्धारित शुल्क भुगतान के बाद उन्हें उत्तर पुस्तिकाओं की फोटो कॉपी प्राप्त करने की अनुमति देत। है।

# MARKING SCHEME HISTORY-027
# CLASS XII A I S S C E-March 2020
# CODE NO. 61/2/1

| प्र॰स॰ | अपेक्षित उत्तर/मूल्य बिंदु | पृष्ठ स॰ | अंक |
|---|---|---|---|
| 1. | फ़्रांस के संग्रहालय में प्रदर्शित करने के लिए<br><br>**अथवा**<br><br>स्तूपों में बुद्ध से जुड़े अवशेष गाड़ दिये जाते थे जिन्हे पवित्र समझा जाता है। | पृ.स.-83<br><br>पृ.स -96 | 1 |
| 2. | बोधिसत्तो को परम करुणामय जीव माना गया जो अपने सत्कार्यों से पुण्य कमाते थे। लेकिन वे इस पुण्य का प्रयोग दुनिया को दुखों में छोड़ देने के लिए और निब्बान प्राप्ति के लिए नहीं करते थे।बल्कि वे इससे दूसरों की सहायता करते थे। | पृ.स -103 | 1 |
| 3. | **वैष्णववाद** वह हिंदू परंपरा है जिसमें विष्णु को सबसे महत्वपूर्ण देवता मानकर उनकी पूजा की जाती है और **शैववाद** वह संकल्पना है जिसमें शिव को सबसे महत्वपूर्ण देवता माना जाता है। | पृ.स -104 | 1 |
| 4. | शहरी केंद्रों / कोई शहरी विशेषता | पृ.स -5 | 1 |
| 5. | C (निषाद) | पृ.स -61 | 1 |
| 6. | C (I और III) | पृ.स -11 | 1 |
| 7. | मथुरा से प्राप्त बुद्ध की मूर्ति<br><br>**दृष्टिबधितों के लिए**: शालभंजिका | पृ.स -103<br><br>पृ.स -101 | 1 |
| 8. | किताब-उल-हिन्द | पृ.स -117 | 1 |
| 9. | इब्न बतूता | पृ.स -118 | 1 |
| 10. | वह सम्राट शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र दारा शिकोह का चिकित्सक था। | पृ.स -122 | 1 |
| 11. | C (हरिहर और बुक्का) | पृ.स -171 | 1 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 12. | B(I,II और III) | पृ.स -173 | 1 |
| 13. | D (कंधार को लेकर उसके सफाविदों के साथ सौहाद्रपूर्ण संबंध थे) | पृ.स -230 | 1 |
| 14. | दिल्ली | पृ.स -221 | 1 |
| 15. | गुलबदन बेगम<br>**अथवा**<br>अब्दुल हमीद लाहौरी | पृ.स -243<br><br>पृ.स -231 | 1 |
| 16. | D ( अंग्रेज़ों की अनुमति के बिना सहयोगी पक्ष किन्हीं अन्य शासकों के साथ संधि कर सकेगा) | पृ.स -296 | 1 |
| 17. | C [ (A) और (R) दोनों सही हैं और(R),(A) की सही व्याख्या है।] | पृ.स -365 | 1 |
| 18. | i अफ़वाह फैल गई थी कि अंग्रेज़ो ने हिन्दू और मुसलमानों का धर्म भ्रष्ट करने के लिए बाज़ार में मिलने वाले आटे में गाय और सूअर की हड्डियों का चुरा मिलवा दिया है।<br>ii गाय और सूअर की चर्बी लगे एन्फ़ील्ड राइफल के कारतूसों को मुँह से लगाने पर हिन्दू और मुसलमानों का धर्म भ्रष्ट हो जाएगा।<br>कोई एक बिंदु | पृ.स -294 | 1 |
| 19. | B(III,I,IV,II) | पृ.स - 361,364,391,411 | 1 |
| 20. | i सविनय अवज्ञा आंदोलन को वापस लेना<br>ii सारे कैदियों की रिहाई<br>iii तटीय इलाकों में नमक उत्पादन की अनुमति देना<br>iv कोई अन्य मान्य बिंदु<br>कोई एक बिंदु | पृ.स -360 | 1 |
| | <u>खंड ख</u> | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 21. | **<u>हड़प्पावासियों द्वारा कृषि के लिए प्रयुक्त सिंचाई के तरीके :</u>**<br><br>i. अधिकांश हड़प्पा स्थल अर्ध –शुष्क क्षेत्रों में स्थित हैं जहाँ संभवत: कृषि के लिए सिंचाई की आवश्यकता पड़ती होगी।<br>ii. अफ़गानिस्तान में शोर्तुघई नामक हड़प्पा स्थल से नहरों के कुछ अवशेष मिले हैं।<br>iii. ऐसा भी हो सकता है कि कुओं से प्राप्त पानी का प्रयोग सिंचाई के लिए किया जाता हो।<br>iv. धौलावीरा में मिले जलाशयों का प्रयोग संभवत: कृषि के लिए जल संचयन हेतु किया जाता | पृ.स -3-4 | 3 |
| 22. | **<u>महानवमी डिब्बा,विजयनगर की एक विशिष्ट संरचना थी:</u>**<br><br>i. महानवमी डिब्बा, एक विशालकाय मंच है जो लगभग 11000 वर्ग फीट के आधार से 40 फीट की ऊँचाई तक जाता है।<br>ii. ऐसे साक्ष्य मिले हैं जिनसे पता चलता है कि इस पर एक लकड़ी की संरचना बनी थी।<br>iii. मंच का आधार उभारदार उत्कीर्णन से पटा पड़ा है।<br>iv. इस संरचना से जुड़े अनुष्ठान, संभवत: सितंबर तथा अक्टूबर के शरद मासों में मनाए जाने वाले दस दिन के हिंदू त्यौहार, से जुड़े हुए है।(दशहरा, दुर्गा पूजा,नवरात्री,महानवमी)<br>v. राजकीय केंद्र में स्थित कई और संरचनाओं की तरह यह भी एक पहेली बना हुआ है।<br>vi. कोई अन्य मान्य बिंदु<br>किन्ही तीन बिन्दुओं की व्याख्या | पृ.स -180-181 | 3 |
| 23. | **<u>वे परिस्थितियाँ जिनके अंतर्गत अंग्रेज़ अधिकारियों ने उन्नीसवीं शताब्दी में संथालों को राजमहल की पहाड़ियों में बसने के लिए आमंत्रित किया:</u>**<br><br>i जब ब्रिटिश लोग पहाड़ियों को अपने बस में करने में असफल रहे तो उनका ध्यान संथालों की ओर गया।<br>ii संथाल आदर्श बाशिंदे प्रतीत हुए, क्योंकि उन्हें जंगलों का सफ़ाया करने में कोई हिचक नहीं थी और वे भूमि को पूरी ताक़त लगाकर जोतते थे।<br>iii संथालों को ज़मीनें देकर राजमहल की तलहटी में बसने के लिए तैयार कर लिया गया।<br>iv संथालों ने हल चलाकर खेती की और स्थायी किसान बन गये ।<br>v कोई अन्य मान्य बिन्दु | पृ.स -270-271 | 3 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | किन्ही तीन बिंदुओ की व्याख्या<br>**अथवा**<br>**<u>अठारहवी शताब्दी के अंत के दशकों में राजमहल की पहाड़ियों के पहाड़ी लोगों की आर्थिक और सामाजिक दशा</u>** :<br>i शिकारियों, झूम खेती करने वालों, खाद्य बटोरने वालों, काठकोयला बनाने वालों, रेशम के कीड़े पालने वालों के रूप में पहाड़िया लोगों की ज़िंदगी जंगल स घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई थी।<br>ii वे इमली के पेड़ों के बीच बनी अपनो झोपड़ियों में रहते थे और आम के पेड़ों की छाव में आराम करते थे।<br>iii उनके मुखिया लोग अपने समूह में एकता बनाए रखते थे, आपसी लड़ाई-झगड़े निपटा देते थे।<br>iv पहाड़िया लोग बराबर उन मैदानों पर आक्रमण करते रहते थे जहाँ किसान एक स्थान पर बस कर अपनी खेती-बाड़ी किया करते थे।<br>v पहाड़िया लोग अपने खाने के लिए तरह-तरह की दालें और ज्वार-बाजरा उगा लेते थे।<br>vi पहाड़िया लोग खाने के लिए *महुआ* के फूल इकट्ठे करते थे, बेचने के लिए रेशम के कोया और राल और काठकोयला बनाने के लिए लकड़ियाँ इकट्ठी करते थे।<br>vii वे पूरे प्रदेश को अपनी निजी भूमि मानते थे।<br>viii वे बाहरी लोगों के प्रवेश का प्रतिरोध करते थे।<br>ix व्यापारी लोग भी इन पहाड़ियों द्वारा निर्यंत्रित रास्तों का इस्तेमाल करने की अनुमति प्राप्त करने हेतु उन्हें कुछ पथकर दिया करते थे।<br>x कोई अन्य मान्य बिंदु<br>किन्ही तीन बिंदुओं की व्याख्या | पृ.स -267-269 | 3 |
| 24. | **<u>"स्वराज्य के लिए हिंदू,मुसलमान,पारसी और सिक्ख, सबको एकजुट होना पड़ेगा"</u>**<br>**<u>असहयोग आंदोलन:</u>**<br>i **गांधीजी ने** खिलाफ़त आंदोलन के साथ हाथ मिला लिए।<br>ii हिंदू और मुसलमान मिलकर औपनिवेशिक शासन का अंत कर देंगे।<br>iii आम लोगों ने चाहे हिंदू,मुसलमान,पारसी या सिक्ख हो सबने आंदोलन | पृ.स -350 | 3 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | में भाग लिया।<br>iv औपनिवेशिक शासन के खिलाफ़ असहयोग की अपील पर किसानों,कामगारों और दूसरों ने औपनिवेशिक कानूनों की अवहेलना कर दी।<br>v कोई अन्य मान्य बिंदु<br>किन्ही तीन बिंदुओं की व्याख्या | | |
| | खंड ग | | |
| 25. | **<u>महाजनपदों की विशेषताएँ</u>**<br>i. अधिकांश महाजनपदों पर राजा का शासन होता था।<br>ii. *गण* और संघ के नाम से प्रसिद्ध राज्यों में कई लोगों का समूह शासन करता था,इस समूह का प्रत्येक व्यक्ति राजा कहलाता था।<br>iii. भगवान महावीर और भगवान बुद्ध इन्हीं *गणों* से संबंधित थे।<br>iv. प्रत्येक महाजनपद की एक राजधानी होती थी जिसे प्राय: किले से घेरा जाता था।<br>v. ब्राह्मणों ने धर्मशास्त्र नामक ग्रंथों में शासकों के लिए नियम निर्धारित किए।<br>vi. शासकों का काम किसानों, व्यापारियों और शिल्पकारों से कर तथा भेंट वसूलना माना जाता था।<br>vii. धीरे-धीरे कुछ राज्यों ने अपनी स्थायी सेनाएँ और नौकरशाही तंत्र तैयार कर लिए।<br>viii. बाक़ी राज्य अब भी सहायक-सेना पर निर्भर थे जिन्हें प्राय: कृषक वर्ग से नियुक्त किया जाता था।<br>ix. कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु<br>किन्ही चार बिंदुओ की व्याख्या<br>**<u>सबसे शक्तिशाली जनपद के रूप में मगध</u>**<br>i. मगध क्षेत्र में खेती की उपज खास तौर पर अच्छी होती थी।<br>ii. लोहे की खदानें आसानी से उपलब्ध थीं जिससे उपकरण और हथियार बनाना सरल होता था।<br>iii. जंगली क्षेत्रों में हाथी उपलब्ध थे जो सेना के एक महत्वपूर्ण अंग थे।<br>iv. गंगा और इसकी उपनदियों से आवागमन सस्ता व सुलभ | पृ.स -29-31 | 4+4=8 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | होता था।<br>v. बिंबिसार, अजातसतु और महापद्मनंद जैसे महत्वाकांक्षी और शक्तिशाली शासक और उनकी नीतियाँ ।<br>vi. राजगाह ('राजाओं का घर')मगध की राजधानी थी जो पहाड़ियों के बीच बसा एक किलेबंद शहर था। बाद में पाटलिपुत्र को राजधानी बनाया गया, जिसकी गंगा के रास्ते आवागमन के मार्ग पर अवस्थिति थी।<br>**किन्ही चार बिंदुओ की व्याख्या**<br><br>**अथवा**<br><br>**<u>मौर्य प्रशासन की मुख्य विशेषताएँ :</u>**<br>i. मौर्य साम्राज्य के पाँच प्रमुख राजनीतिक केंद्र थे। वे थे पाटलिपुत्र,तक्षशिला,उज्जयिनी, तोसलि और सुवर्णगिरि।<br>ii. सबसे प्रबल प्रशासनिक नियंत्रण साम्राज्य की राजधानी तथा उसके आसपास के प्रांतीय केंद्रों पर था।<br>iii. भूमि और नदियों दोनों मार्गों स आवागमन बना रहना अत्यंत आवश्यक था।<br>iv. यात्रियों के लिए सेना सुरक्षा का एक प्रमुख माध्यम रही होगी।<br>v. मेगस्थनीज़ ने सैनिक गतिविधियों के संचालन के लिए एक समिति और छः उपसमितियों का उल्लेख किया है।<br>vi. असोक ने अपने साम्राज्य को अखंड बनाए रखने के लिए *धम्म* का प्रचार भी किया।<br>**किन्ही पाँच बिंदुओ की व्याख्या**<br><br>**<u>अशोक के 'धम्म' के सिद्धांत :</u>**<br>i. असोक के *धम्म* के सिद्धांत बहुत ही साधारण और सार्वभौमिक थे<br>ii. असोक के अनुसार *धम्म* के माध्यम से लोगों का जीवन इस संसार में और इसके बाद के संसार में अच्छा रहेगा।<br>iii. असोक ने अपने अधिकारियों और प्रजा के लिए संदेश पत्थरों और | पृ.स -32-34 | 5+3=8 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | स्तंभों पर लिखवाए।<br>iv. इनमें बड़ों के प्रति आदर, संन्यासियों और ब्राह्मणों के प्रति उदारता, शामिल है।<br>v. सेवकों और दासों के साथ उदार व्यवहार।<br>vi. दूसरे के धर्मों और परंपराओं का आदर।<br>vii. *धम्म* के प्रचार के लिए *धम्म महामात्त* नाम से विशेष अधिकारियों की नियुक्ति की गई।<br>किन्ही तीन बिंदुओ की व्याख्या | | |
| 26. | **<u>मुग़लकाल के दौरान जंगल में रहने वाले लोगों का जीवन :</u>**<br>i. **जंगल में रहने वाले लोगों का** गुज़ारा जंगल के उत्पादों, शिकार और स्थानांतरीय खेती से होता था।<br>ii. ये काम मौसम के मुताबिक **करते** थे। उदाहरण के तौर पर भीलों **की** जीवनचर्या।<br>iii. **लगातार गतिशीलता जंगल में रहने वाले कबीलों की विशिष्ट विशेषता थी।**<br>iv. जंगलवासियों द्वारा मुग़लो को दी जाने वाली पेशकश में हाथी शामिल होते थे।<br>v. शिकार अभियान राज्य के न्याय करने के सरोकार का एक लक्षण था।<br>vi. **बादशाह व्यक्तिगत रूप से जंगलवासियों की समस्याओं और शिकायतों पर गौर करता था।**<br>vii. वाणिज्यिक खेती का असर, बाहरी कारक **था**।<br>viii. जंगल के उत्पाद,जैसे,**मधुमोम**,शहद आदि समुद्र पार निर्यात की मुख्य वस्तुएँ थी।<br>ix. कुछ कबील ज़मीनी व्यापार में लगे थे, **जैसे** लोहानी कबीला।<br>x. **जंगलवासियों द्वारा** हाथी पकड़े और बेचे जाते थे।<br>xi. कई कबीलों के सरदार ज़मींदार बन गए, कुछ तो राजा भी हो गये **जैसे अहोम।**<br>xii. उन्होंने अपन ही **भाई-बंधुओं** को सेना में भर्ती किया।<br>xiii. जंगल के इलाकों में नए सांस्कृतिक प्रभावों के विस्तार की भी शुरुआत हुई।<br>xiv. नए बसे इलाकों के खेतिहर समुदायों ने जिस तरह **धीरे-धीरे** | पृ.स -208-211 | 8 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | इस्लाम को अपनाया उसमें सूफ़ी संतों ने भूमिका अदा की थी।<br>xv. कोई अन्य मान्य बिंदु<br>समग्रता में मूल्यांकन<br>अथवा<br>**<u>मुग़लकाल के दौरान कृषि उत्पादन से जुड़े किसानों और भूमिहर संभ्रांतों की भूमिका</u>:**<br>i. दो किस्म के किसान थे - *खुद-काश्त* व *पाहि-काश्त* ।<br>ii. लोग अपनी मर्ज़ी से भी पाहि-काश्त बनते थे और मजबूरन भी।<br>iii. किसान साल भर अलग-अलग मौसम में वो तमाम काम करते थे ज़मीन की जुताई, बीज बोना और फ़सल पकने पर उसकी कटाई।<br>iv. ज़मीन की बहुतायत, मजदूरों की मौजूदगी, और किसानों की गतिशीलता की वजह से कृषि का लगातार विस्तार हुआ।<br>v. खेती का प्राथमिक उद्देश्य लोगों का पेट भरना था।<br>vi. चावल, गेहूँ, ज्वार इत्यादि फसलें सबसे ज़्यादा उगाई जाती थीं।<br>vii. कृषि श्रम प्रधान थी।<br>viii. किसान ऐसी तकनीकों का इस्तेमाल भी करते थे जो अकसर पशुबल पर आधारित होती थीं।<br>ix. मौसम के दो मुख्य चक्रों के दौरान खेती की जाती थी -खरीफ़ और रबी।<br>x. खेती सिर्फ़ गुज़ारा करने के लिए ही नहीं की जाती थी बल्कि कपास और गन्ने जैसी जिन्स-ए-कामिल फसलों की भी खेती की जाती थीं।<br>xi. एक औसत किसान की ज़मीन पर पेट भरने के लिए होने वाले उत्पादन और व्यापार के लिए किए जाने वाले उत्पादन एक दूसरे से जुड़े हुए थे।<br>xii. दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से कई नयी फसलें जैसे मक्का,टमाटर, आलू, मिर्च,अनानास और पपीता भारतीय उपमहाद्वीप पहुँची।<br>xiii. किसान उन वस्तुओं के उत्पादन में भी शरीक़ होते थे जो कृषि-आधारित थीं<br>xiv. ज़मींदारों की विस्तृत व्यक्तिगत ज़मीन थी जिसे *मिल्कियत* कहते थे।<br>xv. *मिल्कियत* ज़मीनों पर दिहाड़ी के मज़दूर काम करते थे।<br>xvi. कोई अन्य मान्य बिंदु<br>समग्रता में मूल्यांकन | पृ.स -196-201,211 | 8 |
| 27. | **<u>"अंग्रेज़ो ने बंगाल में अपने शासन के शुरू से ही नगर नियोजन कार्यभार अपने</u>** | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | **<u>हाथों में ले लिया था”:</u>**<br>i. पूरे शहरी स्थान और शहरी भूमि उपयोग के नियमन के लिए शहर नियोजन आवश्यक था।<br>ii. एक फ़ौरी वजह तो रक्षा उद्देश्यों से संबंधित थी।<br>iii. अंग्रेज़ व्यापारियों द्वारा माल गोदाम के तौर पर बनाए गए किलों की रक्षा के लिए।<br>iv. प्लासी के युद्ध के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी ने एक ऐसा नया किला बनाने का फ़ैसला लिया जिस पर आसानी से हमला न किया जा सके।<br>v. कलकत्ता को सुतानाती, कोलकाता और गोविंदपुर, इन तीन गावों को मिला कर बनाया गया था।<br>vi. अंग्रेज़ फ़ोर्ट विलियम से बाहर मैदान के किनारे पर भी आवासीय इमारतें बनाने लगे।<br>vii. कलकत्ता में अंग्रेज़ों की बस्तियाँ इसी तरह अस्तित्व में आनी शुरू हुईं।<br>viii. लॉर्ड वेलेज़्ली ने कलकत्ता में अपने लिए गवर्नमेंट हाउस के नाम से एक महल बनवाया। यह इमारत अंग्रेज़ों की सत्ता का प्रतीक थी।<br>ix. वह हिन्दुस्तानी आबादी वाले हिस्से की हालत को देखकर परेशान हो उठा।<br>x. उष्णकटिबंधीय जलवायु को स्वास्थ्य के लिए हानिकारक माना जाता था।<br>xi. जनस्वास्थ्य एक ऐसा विचार बन गया जिसकी नगर-नियोजन परियोजनाओं में बार-बार दुहाई दी जाने लगी।<br>xii. नगर-नियोजन का काम लॉटरी कमेटी ने जारी रखा।<br>xiii. लांटरी कमेटी ने शहर का एक नया न.क्शा बनवाया,सड़क-निर्माण और नदी किनारे से अवैध क़ब्ज़े हटवाए और झोंपड़ियों को साफ़ करवाया।<br>xiv. सख्त निर्माण नियमन बनाए गये उदाहरण के लिए, 1836 में फूस की | पृ.स -334-337 | 8 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | झोंपड़ियों को अवैध घोषित कर दिया गया।<br><br>xv. उन्नीसवीं सदी आते-आते स्वाथ्यकर और अस्वास्थ्यकर के नए विभेद के सहारे व्हाइट, और ब्लैक टाउन वाले नस्ली विभाजन को और बल मिला।<br><br>xvi. कोई अन्य मान्य बिंदु<br><br>समग्रता में मूल्यांकन<br><br>अथवा<br><br>**<u>"अंग्रेजों ने भारत में हिल स्टेशनों की स्थापना की":</u>**<br><br>i हिल स्टेशन औपनिवेशिक शहरी विकास का एक खास पहलू थी।<br>ii हिल स्टेशनों की स्थापना और बसावट का संबंध सबसे पहले ब्रिटिश सेना की ज़रूरतों से था जैसे सिमला,माउंट आबू और दार्जिलिंग।<br>iii हिल स्टेशन फ़ौजियों को ठहराने, सरहद की चौकसी करने और दुश्मन के ख़िलाफ़ हमला बोलने के लिए महन्वपूण स्थान थे।<br>iv अंग्रेज़ो के लिए भारतीय पहाड़ों की मृदु और ठंडी जलवायु को फायदे की चीज़ माना जाता था।<br>v सेना की मौजूदगी के कारण ये स्थान पहाड़ियों में एक नयी तरह की छावनी बन गये।<br>vi हिल स्टेशनों को सेनेटोरियम के रूप में भी विकसित किया गया था।<br>vii वायसराय अपने पूरे अमले के साथ हर साल गर्मियों में हिल स्टेशनों पर ही डेरा डाल लिया करते थे।<br>viii शिमला भारतीय सेना के कमांडर इन चीफ़ का अधिकृत आवास बन गया।<br>ix यहाँ चर्च और शैक्षणिक संस्थान विकसित हुए।<br>x रेलवे के आने से ये पर्वतीय सैरगाहें बहुत तरह के लोगों की पहुंच में आ गए।<br>xi हिल स्टेशन औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण थे।<br>xii कोई अन्य मान्य बिंदु<br><br>समग्रता में मूल्यांकन | पृ.स -327-328 | 8 |
| | खंड घ | | |
| 28. | **<u>"उचित" सामाजिक कर्तव्य</u>** | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | 28.1 **द्रोण ने एकलव्य को अपना शिष्य स्वीकार करने से क्यों मना कर दिया**?<br><br>i.द्रोण धर्म समझते थे और केवल कुरु राजकुमारों को शिक्षा देते थे।<br><br>ii. एकलव्य वनवासी निषाद था।<br><br>iii.द्रोण ब्राह्मण थे और कुरु राजकुमारों को धनुर्विद्या की शिक्षा देते थे।<br><br>कोई दो बिंदु | पृ.स -62 | 2 |
| | 28.2 **एकलव्य ने तीर चलाने की उत्तम कुशलता कैसे प्राप्त की**?<br><br>i. द्रोण के मना करने पर एकलव्य वन में लौट आया।<br><br>ii. उसने मिट्टी से द्रोण की प्रतिमा बनाई और उसके सामने तीर चलाने का अभ्यास करने लगा।<br><br>iii.वह तीर चलाने में सिद्धहस्त हो गया।<br><br>कोई दो बिंदु | पृ.स -62 | 2 |
| | **28.3 एकलव्य ने अपने-आप को पांडवों के समक्ष द्रोण का शिष्य होने का परिचय क्यों दिया?**<br><br>i. जब कुरु राजकुमारों का कुत्ता उसे देखकर भौंकने लगा तो वह क्रोधित हो गया।<br><br>ii. उसने सात तीर चलाकर उसका मुँहबंद कर दिया।<br><br>iii. पांडव तीरंदाज़ी का यह अदभुत दृश्य देखकर आश्चर्यचकित रह गये और एकलव्य को तलाशा।<br><br>iv. उसने स्वयं को द्रोण का शिष्य बताया।<br><br>कोई दो बिंदु | पृ.स -62 | 2 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 29. | <u>मुगल शहज़ादी जहाँआरा की तीर्थयात्रा 1643</u><br><br>29.1 **जहाँआरा ने शेख के प्रति अपने विश्वास और भक्ति को किस प्रकार दर्शाया**?<br><br>i. उसने दो बार की अख्तियारी नमाज़ अदा की।<br><br>ii बहुत दिनों तक वह रात को बाघ के चमड़े पर नहीं सोयी।<br><br>iii उसने अपने पैर मुकद्दस दरगाह की तरफ नहीं फैलाए।<br><br>iv उसने अपनी पीठ उनकी तरफ नहीं की।<br><br>v. वह पेड़ के नीचे दिन गुजारती थी।<br><br>कोई दो बिन्दु | पृ.स -156 | 2 |
| | 29.2 **उसने दरगाह को एक विशिष्ट तीर्थ और श्रद्धा का स्थल क्यों माना**?<br><br>i. ईश्वर के प्रति उसके श्रद्धा और समर्पण की वजह से।<br><br>ii. वह अपने मुर्शीद(गुरु) की मुरीद थी।<br><br>iii. यह पारिवारिक परंपरा थी।<br><br>iv. आशीर्वाद के लिए।<br><br>v. कोई अन्य मान्य बिंदु।<br><br>कोई दो बिंदु | पृ.स -156 | 2 |
| | 29.3 **उसने किस प्रकार दरगाह पर अपना सम्मान प्रकट किया**?<br><br>i उसने अपने जर्द चेहरे को उसकी चौखट की धूल से रगड़ा।<br><br>ii वह नंगे पाव वहाँ की ज़मीन को चूमती हुई गयी।<br><br>iii उसने मज़ार के चारों ओर फेरे लिए।<br><br>iv उसने सबसे उम्दा इतर मुकद्दस दरगाह पर छिड़का। | पृ.स -156 | 2 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | v गुलाबी दुपट्टा जो उसके सिर पर था उसे उतारकर मुकद्दस मज़ार के ऊपर रखा।<br><br>कोई दो बिंदु | | |
| 30. | **“एक गोली भी नहीं चलाई गयी”**<br><br>30.1 **प्रशासनिक व्यवस्था के समाप्त हो जाने के कारणों की परख कीजिये**?<br><br>i. बंटवारे की प्रक्रिया चल रही थी।<br><br>ii किसी को मालूम नहीं था कि सत्ता किसके हाथ में है।<br><br>iii शासन तंत्र पूरी तरह नष्ट हो चुका था।<br><br>कोई दो बिंदु<br><br>30.2 **हालत को नियंत्रित करने के लिए अंग्रेज़ अधिकारी कोई कदम क्यों नहीं उठा सके**?<br><br>i. अंग्रेज़ अफ़सरों को सूझ नहीं रहा था कि हालात को कैसे संभाला जाए।<br>ii. किसी को मालूम नहीं था कि सत्ता किसके हाथ में है।<br>iii. अंग्रेज़ भारत छोड़ने की तैयारी में लगे थे।<br><br>कोई दो बिंदु<br><br>30.3 **क्या आप यह सोचते है कि ज़िला मजिस्ट्रेट की भूमिका न्यायसंगत थी**?<br><br>उत्तर हाँ या नहीं हो सकता है।<br><br>(विद्यार्थी के स्वयं के विचार ) | पृ.स -392<br><br>पृ.स -392<br><br>पृ.स -392 | 2<br><br>2<br><br>2 |
| | खंड ड. | | |
| 31. | <u>भरा हुआ संलग्न मानचित्र देखें</u><br><br>**<u>केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए</u>** : | | 3+3=6 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | 31.1 **विकसित हड़प्पाई पुरास्थल (कोई तीन):**<br><br>हड़प्पा,मोहनजोदड़ो, लोथल,नागेश्वर,कालीबंगन,राखीगढ़ी,बनावली, धौलावीरा, चन्हुदडो, बालाकोट<br><br>**अथवा**<br><br>1857 **के विद्रोह के केंद्र** (**कोई तीन**):<br><br>कानपुर,झाँसी,मेरठ,दिल्ली,आज़मगढ़,लखनऊ,कलकत्ता,बनारस,ग्वालियर,जबलपुर, आगरा,अवध<br><br>31.2 **राष्ट्रीय आंदोलन के केंद्र (कोई तीन):**<br><br>चंपारण,खेड़ा,अहमदाबाद,बनारस,अमृतसर,चौरी चौरा,लाहौर,बारदोली,दांडी,बंबई,कराची | | 1x3=3<br><br>1x3=3 |

61/2/1, 61/2/2, 61/2/3

प्रश्न सं. 31.1 और 31.2 के लिए

For question no. 31.1 and 31.2